By:- Sunita Kumari
Dept. of History
J.N.C. Madhubani

B.A. History
Deg - I (Sub)

अलाउद्दीन खिलजी के आर्थिक सुधारों का परीक्षण
(Examine the economic reforms of Alauddin khilji)

खिलजी वंश के शासकों में अलाउद्दीन सबसे प्रभावशाली शासक हुआ। उसने लगभग बीस वर्षों तक (1296-1316 ई०) शासन किया। उसने दिल्ली साम्राज्य की सीमा का विस्तार किया। इतना ही नहीं उसने सुल्तान के पद की गरिमा एवं शक्ति पुनः स्थापित की तथा आर्थिक एवं प्रशासनिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण सुधार किये।

अलाउद्दीन खिलजी के शासन प्रबन्ध की बहुत बड़ी विशेषता यह थी कि उसने राजनीति को धर्म से अलग कर दिया था। वह राजनीतिक क्षेत्र में उलेमाओं के विचार से राज्य के हित में होता था। वह स्वंय कहा करता था कि "मैं नहीं जानता कि मेरे द्वारा निर्मित नियम शरियत के अनुकूल है या नहीं। मैं जो कुछ राज्य हित के लिए अच्छा और परिस्थिति के अनुकूल समझता हूं वही करता हूं। इसके कारण मुझे परलोक में यातना भोगनी होगी या आनन्द मिलेगा, इसकी मुझे चिन्ता नहीं है।" अमीर खुसरो ने अलाउद्दीन को इस्लाम का समर्थक माना है। कहा जाता है कि अलाउद्दीन खिलजी ने यह शब्द कहे थे कि - "यद्यपि मैंने कुरान व विधान का अध्ययन नहीं किया तथापि एक मुसलमान मुस्लिम रक्त का हूँ।" अलाउद्दीन के मकबरे के लेख से भी यह स्पष्ट पता चलता है कि उसे इस्लाम में पूर्ण विश्वास था।

1. भू- राजस्व एवं आर्थिक सुधार:- अपने विशाल साम्राज्य के शासन को चलाने के लिए तथा विशाल सेना पर खर्च किये जाने के लिए अलाउद्दीन को धन की अत्याधिक आवश्यकता थी। इसलिए उसने धन प्राप्त करने के लिए विभिन्न तरह के उपाय निकाले।

उसने सर्वप्रथम लोगों की सम्पत्ति को छिनना शुरू किया। पहले जो भूमि लोगों को दान या इनाम में मिली थी उसने छिन लिया। जो लोग पहले से कर-मुक्त थे सुल्तान ने उन सबों के पर कर लगा दिया। अमीरों की सारी जागीदारी छिन ली गई और सबों को पेन्सन से वंचित कर दिया गया। इस तरह से राजकीय कोष भरने लगा।

भूमि-कर आमदनी का सबसे बड़ा साधन था। इसलिए सुल्तान ने भूमि को खालसा भूमि बना दिया। खालसा भूमि का अर्थ था कि समस्त भूमि को सरकार के अधिकार में चला जाना। इस तरह से भूमिकर स्वयं सरकार वसूलती थी। अलाउद्दीन ने अपने राज्य की सारी भूमि का नाप करवा कर भूमिकर निश्चित कर दिया। जितनी उपजाऊ जमीन होती थी उतना ही कर लगाया जाता था। अधिक भूमि का कर अधिक और कम उपजाऊ का कम। इस तरह से अलाउद्दीन ने सुचारु रूप से राज्य चलाने तथा सैनिक व्यय के लिए बहुत धन एकत्र कर लिया। परन्तु उसका साम्राज्य तथा उसकी सेना इतनी विशाल थी कि वह अपने सैनिकों को अधिक वेतन नहीं दे सकता था। आवश्यक वस्तुओं के मूल्य को सुल्तान ने घटा दिया था जिससे थोड़े वेतन में भी उन सबों का कार्य चल जाया करता था। उसने वस्तुओं का मूल्यों का मूल्य निश्चित करवा दिया था। अतः बाजार पर सरकार का पूरा नियंत्रण था।

2. बाजार एवं मूल्य-नियंत्रण :- अलाउद्दीन खिलजी का दूसरा महत्वपूर्ण आर्थिक सुधार था बाजार एवं मूल्य नियंत्रण स्थापित करना। संभवतः सैनिकों को अधिक कीमत पर वस्तुएँ उपलब्ध कराने के लिए ही सुल्तान ने यह व्यवस्था की थी।